REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

"सिरसा जिले में सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित विविध कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना का अध्ययन"

डॉ. सतपाल स्वामी
प्राचार्य , गीता कॉ–एज्यूकेशन टी.टी. कॉलेज, नई मण्डी, घड़साना।

सारांश :–

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य सिरसा जिले में सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित विविध कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना का अध्ययन करना है। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा दत्त संकलन हेतु स्वंय निर्मित जन चेतना 'मापनी' का प्रयोग किया गया है व निष्कर्ष रूप में पाया कि उक्त परिकल्पना में मध्यमान के आधार पर सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना में ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिभावक, शहरी विद्यार्थियों के अभिभावक से पिछड़े हुए हैं।

प्रस्तावना :–

"जीवन का लक्ष्य है अन्तिम, बन्धन मुक्त मोक्ष को पायें।।
शिक्षा का भी उद्देश्य यही है, सा विद्या या विमुक्तये।।

विद्या का यथार्थ लक्ष्य, उसके आधारभूत जीवन मूल्य तथा उनको सुचारू रूप से विकसित करते हुए नितान्त आवश्यक वातावरण, उस वातावरण को मनोरम तथा संस्कारमय बनाने के लिए, ध्यान देने योग्य अनिवार्य करणीकर्म, व्यवस्था, प्रबन्ध समिति, विद्वज्जन तथा आधारभूत जीवन समाज। शिक्षा के सभी अंगों प्रत्यंगों को पुष्ट होना आवश्यक है।

नवजात शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। उसका न कोई मित्र होता और न कोई शत्रु। यही नहीं उसे समाज के रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं का भी ज्ञान नहीं होता है और न उसमें किसी आदर्श तथा मूल्यों को प्राप्त करने की जिज्ञासा पाई जाती है। किन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है, वैसे–वैसे उसका एक ओर शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक एवं संवेगात्मक विकास होता है, वहीं दूसरी ओर उसमें घर–परिवार, समाज तथा राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है, इसे सामाजीकरण कहते है। इसमें परिवार, समाज, समुदाय और राज्य की अनौपचारिक तथा औपचारिक शिक्षा का महत्त्व होता है। शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए पैस्टालॉजी ने ठीक ही कहा है कि "शिक्षा ग्रहण करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।" इसलिए शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है, तो जन्म लेने वाले प्रत्येक बच्चे को यह अधिकार मिलना चाहिए।

समस्या कथन :–

"सिरसा जिले में सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित विविध कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना का अध्ययन"

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

हमारे संविधान निर्माताओं ने अशिक्षा के घातक परिणामों और उससे बचने की प्रबल आवश्यकता

भली–भांति जान समझ ली। इसलिए उन्होंने संविधान में व्यवस्था की कि "राज्य (अर्थात सरकार) इस संविधान के लागु होने के बाद के दस वर्षों की अवधि में सभी बच्चों को 14 वर्ष की उम्र तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करायेगी।"

संविधान में शिक्षा के सम्बंध में स्पष्ट कहा है कि शिक्षा राज्य का विषय है। संविधान की दूसरी सूची, सातवीं अनुसूची के ग्यारवें अंकन पर शत प्रतिशत नामाकंन के लक्ष्य तक नहीं पहुँच पा रहे हैं। इसका एक कारण यह भी है कि देश में आर्थिक संसाधनों के अभाव में विद्यालयों की न्यूनतम् अनिवार्य भौतिक सुविधा नहीं है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित विविध कार्यक्रमों के प्रति अभिभावकों की जन चेतना का अध्ययन करना।
2. सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा हेतु संचालित विविध कार्यक्रमों के प्रति ग्रामीण व शहरी अभिभावकों की जन चेतना का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों की सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों की सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयुक्त शोध विधि :–

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं उसका प्रतिचयन :–

प्रस्तुत शोधकार्य में आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए हरियाणा राज्य के सिरसा जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी के कुल 200 अध्यापकों व अभिभावकों को लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरणों का विवरण :–

''सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित विविध कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना 'मापनी' :– स्वनिर्मित मापनी

आंकड़ों का विश्लेषण :–

सारणी संख्या – 1

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों की सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श का विवरण (अभिभावक)	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (C.R.Value)	सार्थकता स्तर .05
ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिभावक	50	55.9	7.18	0.84	सार्थक अन्तर नहीं है
शहरी विद्यार्थियों के अभिभावक	50	56.92	4.81		

सारणी में विश्लेषित आंकड़ों के अनुसार जन चेतना से सम्बन्धित प्राप्ताकों के आधार पर ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिभावकों एवं शहरी विद्यार्थियों के अभिभावकों के मध्यमान क्रमशः 55.9 एवं 56.92 दर्शाया गया है तथा मानक विचलन क्रमशः 7.18 तथा 4.81 दर्शाया गया है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 0.84 प्राप्त हुआ है। गणना द्वारा प्राप्त मान .05 एवं .01 स्तर के सारणी मान से कम है, अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों की जन चेतना में कोई सार्थक् अन्तर नहीं है। अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या – 2

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों की सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श का विवरण (अभिभावक)	**संख्या (N)**	**माध्य (Mean)**	**मानक विचलन (S.D.)**	**क्रांतिक अनुपात (C.R.Value)**	**सार्थक्ता स्तर**
					.05
सरकारी विद्यार्थियों के अभिभावक	**50**	**56.08**	**6.58**	**0.54**	सार्थक अन्तर नहीं है
गैर सरकारी विद्यार्थियों के अभिभावक	**50**	**56.74**	**5.63**		

सारणी में विश्लेषित आंकड़ों के अनुसार जन चेतना से सम्बन्धित प्राप्ताकों के आधार पर सरकारी एवं गैर सरकारी अभिभावकों के मध्यमान क्रमशः 56.08 एवं 56.74 दर्शाया गया है तथा मानक विचलन क्रमशः 6.58 तथा 5.63 दर्शाया गया है। इन दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 0.54 प्राप्त हुआ है। गणना द्वारा प्राप्त मान .05 एवं .01 स्तर के सारणी मान से कम है, अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी अभिभावकों की जन चेतना में कोई सार्थक् अन्तर नहीं है। अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष :–

1. उक्त परिकल्पना में मध्यमान के आधार पर सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना में ग्रामीण सरकारी अभिभावक, शहरी सरकारी अभिभावकों से पिछड़े हुए है। तथा ग्रामीण गैर सरकारी अभिभावकों की और शहरी गैर सरकारी अभिभावकों की सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना लगभग समान स्तर की है।
2. उक्त परिकल्पना में मध्यमान के आधार पर सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना में ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिभावक, शहरी विद्यार्थियों के अभिभावक से पिछड़े हुए हैं।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. महिला एवं पुरूष अभिभावकों में सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. महिला एवं पुरूष अध्यापकों में सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के तहत संचालित कार्यक्रमों के प्रति जन चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर, मीनाक्षी (2008), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. गर्ग, सरिता (जनवरी 2005), भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसीईआरटी (नई दिल्ली)
3. कपिल, एच.के. (2009), अनुसंधान विधियां, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
4. शर्मा, आर.ए. (2009), विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, सूर्या पब्लिकेशन्स, मेरठ।